IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधुनिक परिपेक्षय में रवीन्द्रनाथ टैगोर एवं अरविंदो घोष की शिक्षा नीति की प्रासंगिकता |

गणेश कुमार

रिसर्च स्कॉलर (शिक्षा विभाग) राधा गोविंद विश्वविद्यालय

रामगढ़ झारखंड

सारांश:-

येषा न विद्या न तपो न दानं,

न चापी शील न गुणों न धर्मम् |

ते मृत्यु लोके भुवी भारभूता,

मनुष्यरूपेण मृगाश्यचरणती | |

का मंत्रपुत् वाक्य भारतीय शिक्षा जगत की संजीवनी है | शिक्षा के प्रति गंभीर दृष्टिकोण पूराकाल से ही सजग रही है | गुरुकुल की पद्धति से अभीसिंचित भारतीय शिक्षा दर्शन का दिग्दर्शन हमारे आर्य ग्रंथों में स्पष्टता: देखने को मिलता है | शिक्षा मनीषियों ने अपने शैक्षिक चिंतनधारा से भारत को ही नहीं प्रत्युत विश्व को भी एक नवीन रोशनी दी है | आगे चलकर विश्व गुरु रवींद्रनाथ टैगोर एवं अरविंद घोषने तो एतद्विषयक एक क्रांतिकारी विचारधारा उपस्थापित किया है | इसलिए भारतीय शिक्षाण -पद्धति में इन दोनों मनीषियों के विचारों,दर्शनों एवं शिक्षा नीति का आदर के साथ स्मरण किया जाता है | रविंद्रनाथ टैगोर ने शिक्षा के प्रति एक गंभीर और सम्यक विवेचना द्वारा भारत ही नहीं बल्कि अन्य देशों की शिक्षा को भी दिशा दी है | व्यक्तित्व निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण की मजबूत बुनियाद शिक्षा होती है| इसी से धर्म, दर्शन, राजनीति, अर्थनीति, संस्कृति आदि परिचालित होते हैं | व्यक्ति एवं राष्ट्र की प्रगति शिक्षा प्रणाली पर निर्भर है | शिक्षा के अभयउत्थान में आज इनकी महत्ता को निर्विवाद स्वीकारते हुए विश्व केख्यात शिक्षाशास्त्रियों के बीच '' गुरुब्रह्मा गुरुविष्णु,गुरुदेवो महेश्वर" के रूप में स्वयमेव ख्यात हैं | अरबिंदो घोष के शिक्षा दर्शन में प्राचीन भारतीय आदर्श का महत्वपूर्ण स्थान है | इसलिए भारतीय शिक्षण पद्धति में इन मनीषियों के विचारों एवं दर्शनों का आदर के साथ स्मरण किया जाता है | रवींद्रनाथ टैगोर एवं अरविंदो घोष बालक का सर्वांगीण विकास चाहते थे एक पक्षीय नहीं | यह दोनों नकेवल उच्च कोटि के कवि एवं विचारक थे वरना एक महान शिक्षा शास्त्री भी थे | टैगोर का जन्म कोलकाता में सन 1861 ईस्वी में 6 मई को हुआ था | साहित्य कला तथा दर्शन के क्षेत्र में अपनी अनुपम उपलब्धि से भारत के मस्तिष्क को ऊंचा करके एवं संसार में भारत के योग्यता का अनूपम सिद्ध करके सन 1941 ईस्वी में 7 अगस्त को

मृत्यु को प्राप्त किए| टैगोर जी कोउनकी रचना गीतांजलि के लिए सन वर्ष 1913 में नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया था साहित्य के क्षेत्र में | श्री अरविंद घोष का जन्म 15 अगस्त 1872 ईस्वी में भारत के प्रसिद्ध नगर कोलकाता में हुआ था | श्री अरविंद घोष पांडिचेरी नामक स्थान पर चले गए एवं कुछ समय बाद वहां एक आश्रम का निर्माण करवाया यह आश्रम श्री अरविंद आश्रम के नाम से प्रसिद्ध है | श्री अरविंद घोष का निधन 5 दिसंबर 1950 ईस्वी को मात्र 78 वर्ष की आयु में हो गया | किसी भी युग का इतिहास और घटनाएं उस युग पुरुष के साथ चलती है, जो मानवता की सच्ची सेवा के लिए तत्पर होता है | संघर्ष की हर चिंगारी संघर्ष करता के लिए फूल बन जाती है | मनुष्य की कर्मशीलता और संकल्पनिष्ठा उसके व्यक्तित्व का सृजन करती है | युग पुरुषों की दृष्टि और बुद्धि सामान्य व्यक्तियों से कुछ भिन्न होती है | इसी के कारण वे समाज के दिशा निर्देशन में तथा उसे विकास के मार्ग में अग्रसर करने में सदैव सफल होते हैं | समाज इसी कारण उनका यशोगान करती है | श्री अरविंदो ने अपने शिक्षा दर्शन में मानव की आध्यात्मिक उन्नति पर अधिक बल दिया है क्योंकि उनके विचार में आज के भौतिक युग में इस उन्नति की अत्यधिक आवश्यकता है | आज के मानव का दृष्टिकोण पूर्ण रूप से भौतिकवादी है उनका ध्यान सदैव अपनी भौतिक आवश्यकताओं को पूर्ण करने में लगा रहता है फलता वह अपने मन की शांति और अपने मन के वास्तविक आनंद को खो चुका है | आज जो शिक्षा प्रणाली हमारे देश में प्रचलित है वह व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति की ओर लेसमात्र ध्यान न देकर उसके भौतिकवादी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करने में लगा है| परिणामत: व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास रुक गया है और उसके अंदर की दिव्य ज्योति बुझ गई है |

मूलशब्द:-- शिक्षा जगत, शैक्षिक चिंतनधारा, व्यक्तित्व, सामाजिक जीवन, आध्यात्मिक |

प्रस्तावना:- प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर एक उच्च कोटि के कवि एवं विचारक भी थे | रवींद्रनाथ टैगोर देवेंद्रनाथ टैगोर के सबसे छोटे पुत्र थे | टैगोर विश्व कवि थे और गीतांजलि उनका विश्वविख्यात ग्रंथ है |" टैगोर आधुनिक भारत में शैक्षिक पुनरुत्थान के सबसे बड़े पैगंबर थे |"----'-डॉ' 0एच0बी0 मुखर्जी '|| प्राचीन काल में विद्यार्थी का संबंध आचार्य या संस्था से नहीं था जबकि आज विद्यार्थी का संबंध संस्था से होता है | आधुनिक शिक्षक कक्षाओं को पढ़ाता है व्यक्तियों को नहीं | आज शिक्षा का उद्देश्य मात्र सूचनात्मक ज्ञान देना है ना कि भावात्मक पक्ष का विकास करना | आज हमारी जो समस्याएं हैं चाहे वे शैक्षिक हो या आर्थिक या राजनीतिक इन सभी में हमारी स्वयं की कमजोरी उजागर होती है | सच तो यह है कि मात्र हम कानूनी संरक्षण पर ही निर्भर रहे है | श्री अरबिंदो घोष एवं टैगोर ने व्यक्तित्व की सर्वोच्च नैतिकता के विकास के उपकरण के रूप में शिक्षा को स्वीकार किया है | अत: हम यह कह सकते हैं कि स्वावलंबी, सच्चरित्र, विनयशील, करुणायुक्त, दयावान, अहिंसक, प्रेम एवं शांति, सहअस्तित्ववादी , लोक कल्याणकारी आदि गुणों से युक्त मानव का निर्माण शिक्षा ही कर सकती है | श्री अरबिंदो घोष एवं गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर के विचार दार्शनिक सिद्धांत मात्र नहीं है वरन वे विचार प्रयोगात्मक है एवं जीवन में परीक्षित किए जा चुके हैं | वे सभी जन- जन को आकृष्ट करने वाले हैं| श्री अरबिंदो घोष एवं गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की समग्रदृष्टि एवं प्रत्येक क्षेत्र में उनका योगदान उनको भारत की साम्यवादी सांस्कृतिक परंपरा का अग्रदूत बना देती है | अतः उन के शैक्षिक विचारों के समावेश के बिना भारतीय शैक्षिक इतिहास अधूरा रह जाता है | श्री अरबिंदो घोष एवं गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर की शिक्षा संबंधी विचार आज भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के कई वर्षों बाद भी शिक्षा जगत में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने एवं शिक्षा प्रणाली के विभिन्न पहलुओं जैसे :- शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा के अर्थ, शिक्षणविधि, पाठ्यक्रम, शिक्षक- शिक्षार्थी, एवं विद्यालय शिक्षा का माध्यम, स्त्री शिक्षा, ग्रामीण शिक्षा, जन शिक्षा, धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा,राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीयता: की शिक्षा के संदर्भ में ही क्यों ना हो प्रत्येक क्षेत्र में भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्राण फूंकने एवं नई आशा की किरण एवं नवज्योति जगाने का सामर्थ रखते हैं | श्री अरबिंदो घोष छात्र जीवन से ही बहुमुखी व्यक्तित्व के परिलक्षित होने लगे थे वे बड़े शान एकांत प्रिय अध्ययन शील प्रखर बुद्धि एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के थे | श्री अरविंदो एकांत में रहकर गहन

चिंतन की हैं उनको उन्होंने लेखनीवध किया | भारतवर्ष के महान विभूतियों में विश्वकवि और प्रथम भारतीय नोबेल पुरस्कार विजेता गीतांजलि के प्रणेता अद्वितीय कलाकार विश्व भारती एवं शांति निकेतन के संस्थापक गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर का नाम भारतीय शिक्षा जगत में सदा आदर के साथ लिया जाता है | टैगोर ने शिक्षा के सिद्धांतों की खोज अपने अनुभव से की है विश्व भारती के संस्थापक के रूप में व एक व्यवहारिक शिक्षा शास्त्री होने का परिचय देते हैं| शिक्षा शास्त्र में उनकी दोनों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वे एक उच्च कोटि के शिक्षा शास्त्री थे | उन्होंने भारतीय शिक्षा में एक प्रयोग का सूत्रपात किया | वह भारतीय आदर्शों से प्रभावित तो थे पाश्चात्य विचारों के प्रति भी वे जागृत थे | टैगोर ने शिक्षा का अर्थ अत्यंत व्यापक रूप से लिया है उनका मत था" शिक्षा का संपर्क हमारे संपूर्ण जीवन आर्थिक, बौद्धिक, सौंदर्यआत्मक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक जीवन में होना चाहिए |"

शिक्षा नीति:-

रविंद्रनाथ टैगोर एवं अरविंदो घोष की शिक्षा नीति का परस्पर तुलनात्मक अध्ययन :-

शिक्षक:- टैगोर के अनुसार शिक्षक की भूमिका को रेखांकित किया है जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में मुख्य भूमिका के रूप में कार्य करें | इस प्रकार छात्रों को दीक्षित करने वाले शिक्षक को छात्रों के प्रति सहानुभूति पूर्ण और मित्र मत होना चाहिए शिक्षक की भूमिका के संबंध में टैगोर ने पाठ्यक्रम पाठ्यपुस्तक शिक्षण विधि या सामग्री की अपेक्षा अधिक जीवंत या प्राण भूत है क्योंकि यह सभी शिक्षक के कार्यक्रम प्रयासों द्वारा ही आकार लेते हैं | शिक्षा की है जो छात्रों को शिक्षा प्रदान करने की जिम्मेदारी निभा रहा है यदि शिक्षक अपनी जिम्मेदारी निभाने में असफल होता है तो शैक्षिक प्रक्रिया के सभी घटक जैसे पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक आदि अप्रभावी एवं अनुपयोगी हो जाते है | यह सत्य है कि किसी भी शैक्षिक प्रक्रिया की सफलता शिक्षक पर निर्भर करती है क्योंकि उसमें शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया की जीवंत सामर्थ होती है | केवल शिक्षक ही है जो शिक्षा को एक गतिशील प्रक्रिया बना सकता है | रविंद्र नाथ टैगोर ने शिक्षक के रूप में ऐसे व्यक्ति का स्वागत किए हैं जो बालकों के लिए आशावादी उच्च आदर्श गौरवान्वित अभिलाषा ओं पर्याप्त सहानुभूति

रखने के नए साहसिक और प्रयोगात्मक अनुसंधान को प्रारंभ करने का निर्णय साहस रखते हो | इस प्रकार गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर शिक्षकों से एक उच्चतर प्रतिष्ठा रखने और उत्तरदायित्व पूर्ण भूमिका निर्वाह करने का प्रस्ताव रखते हैं | टैगोर के अनुसार अध्यापक को शैक्षिक वातावरण का निर्माता एवं पथ प्रदर्शक माना गया है |

श्री अरबिंदो घोष के अनुसार शिक्षक के संबंध में विचार प्रकृतिवादी विचारको से मिलते जुलते हैं वह शिक्षक का स्थान बालक के मित्र सहायक एवं पथ प्रदर्शक के रूप में स्वीकार करते हैं |"शिक्षक ज्ञान देने वाला या कार्य करने वाला ना होकर मार्गदर्शक और सहायक हो | उसका कर्तव्य है वह सुझाव दे और उसको छात्रों पर थोपे नहीं |" शिक्षक के व्यक्तिगत गुणों के संबंध में श्री घोष का विचार है कि एक आदर्श शिक्षक को व्यक्ति की आत्मा को आगे बढ़ाने वाला होना चाहिए किंतु या कार तभी किया जा सकता है जबकि शिक्षक को आध्यात्मिक विषय का स्पष्ट ज्ञान हो वह योग की क्रिया में दक्ष हो | चुकी श्री अरविंद एक महान योगी थे आते हुए शिक्षक को भी योगी बनाना चाहते थे | श्री अरबिंदो घोष के अनुसार शिक्षक को बाल मनोविज्ञान का समुचित ज्ञान होना चाहिए उससे शिक्षक का शिक्षण सफल हो पाता है जिसे बाल मनोविज्ञान का समुचित ज्ञान होता है | शिक्षक क़ो स्वयं में जीवन पर्यंत अध्ययन सील विवेकशील और उचित अनुचित का निर्णय करने की योग्यता रखने वाला होना चाहिए | उसे बालकों को सहज ज्ञान हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए उसमें प्रेम सहानुभूति आदि गुणों का समावेश होना चाहिए | इस प्रकार श्री अरविंदो घोष शिक्षक को एक मित्र सहायक निर्देशक एवं पथ प्रदर्शक के रूप में मान्यता प्रदान करते हैं |

शिक्षार्थी:- श्री अरबिंदो घोष के अनुसार शिक्षार्थी को आदर्शवादी विचारक के साथ–साथ प्रकृतिवाद से भी मिलते जुलते थे | हुए शिक्षार्थी को शिक्षा का केंद्र मानते थे उनका विचार था कि बालक एक ऐसे दैवीय रचना है जिसमें कुछ ईश्वरीय देन और कुछ इस विशिष्ट प्रतिभाएं होती है | श्री अरविंद और व्यक्तिगत विभिन्नता के सिद्धांत को मानते थे और आशा रखते थे कि शिक्षार्थी को केंद्र मानकर उनकी व्यक्तिगत रूचि और सम्मान और क्षमता के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाए | शिक्षार्थी में विनय परोपकार स्वाध्याय एकाग्रता सेवा आदि गुणों का होना आवश्यक | श्री अरविंद घोष ने शिक्षा में बालक का स्थान अत्यंत ऊंचा बताया है उनका कहना है कि बालकों को शिक्षकों पर उतना आश्रित और अवलंबित नहीं बना दिया जाए कि वे उन्हें जैसा चाहे घुमा दे अर्थात बालक शिक्षकों के विचारों के सर्वथा दास हो जाए | उनका मानना था कि शिक्षक और अभिभावक बालको पर ज्ञान का बोझ ना लादे अपितु उनकी आंतरिक शक्तियों का पता लगाएं एवं उसके अनुरूप साधन जुटाने का प्रयास करें जिससे बालक बिना किसी त्रुटि और अवरोध के स्वत ज्ञान की उपलब्धियां करें |

शिक्षार्थी के संबंध में टैगोर का विचार है कि सर्वप्रथम उसे सादा और प्राकृत जीवन से युक्त होना चाहिए जिससे उनका शारीरिक और मानसिक विकास स्वभाविक ढंग से हो उनमें कृत्रिम न आवे | शिक्षा के क्षेत्र में हुए प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को ही अच्छा मानते थे तथा उसे ही स्वीकार किए हैं | टैगोर ने शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षार्थी को उन सभी गुणों से युक्त होने पर बल दिया है जो आदर्शवादी प्रकृतिवाद यथार्थवादी और प्रयोजन वादी विचार धाराओं द्वारा बताए गए गुणों के समन्वय से संभव हो सकते हैं| टैगोर ने शिक्षार्थी को व्यवहार में विनम्रता व्यवस्था और स्वच्छता स्फूर्ति नियम एवं आज्ञा ओं का पालक शरीर और वातावरण की सफाई दोषपूर्ण बातों से दूर रहना व्यक्तित्व और सामाजिक जीवन में अनुशासन स्वतंत्र विचार आंतरिक नियंत्रण आत्मानुभूति पर विशेष बल दिए हैं टैगोर वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण ओं का शिक्षार्थियों द्वारा मेल होना चाहिए पर बल दिए हैं |

विद्यालय:- श्री अरविंदो घोष विद्यालय को प्राचीन ऋषि यों द्वारा संचालित आश्रम के रूप में देखते थे| विद्यालय के संबंध में उनका विचार था कि आश्रम के विषय में जानकारी प्राप्त करके जाने जा सकते हैं | श्री अरविंदो ने आदर्श विद्यालय की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए सर्वप्रथम प्रत्येक विद्यालय से आशा व्यक्त की थी कि वह बालकों के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विकास में सहायक हो मनुष्य के भौतिक विकास हेतु विद्यालय में संसार की सभी श्रेष्ठ भाषाएं साहित्य सभ्यता एवं संस्कृति तथा गणित एवं विज्ञान की शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए और आध्यात्मिक विकास के लिए बालकों को श्रम करके कर्तव्य पालन करके मानव सेवा करके तथा चिंतन करने के अवसर प्रदान करनी चाहिए | पांडिचेरी का श्री अरविंद आश्रम जीवन के हर क्षेत्र में शारीरिक बौद्धिक कलात्मक तथा तकनीकी उन्नति की आधुनिक सापेक्षता के बीच नए प्रयोगों के लिए संकल्पित है | श्री अरविंद घोष पूर्व एवं पश्चिम में एकीकारण पर एक ही कारण पर विशेष बल दिए हैं|

विद्यालय के संबंध में गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर की धारणा यह थी कि विद्यालय प्राचीन भारत में प्रचलित गुरु आश्रम के समान होने चाहिए जो आधुनिक संसार के नगरीय जीवन की हलचल से दूर प्राकृतिक के सुर में और शांत वातावरण में उपस्थित हो |विद्यालय के संबंध में टैगोर का विचार है कि विद्यालय संपूर्ण जीवन एवं उनके विभिन्न पहलुओं से संबंधित होना चाहिए| शिक्षा के लिए उपयुक्त स्थान और परिवेश के संबंध में उन्होंने अपने प्राचीन काल के तपोवन और गुरु ग्रह प्रणाली को श्रेष्ठ माना है | अपने शिक्षा दर्शन को व्यवहारिक रूप देने के लिए गुरुदेव ने सन उन्नीस सौ एक में बोलपुर के निकट सुर में शांत एवं एकांत वातावरण में शांति निकेतन विद्यालय की स्थापना की |

स्त्री शिक्षा:- गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर मानव एकता के आदर्श के समर्थक थे इसलिए वह समाज के एक महत्वपूर्ण वर्ग के प्रति किसी रूप में भी उदासीन नहीं होना चाहते थे | स्त्री जाति के प्रति तत्कालीन समाज का दृष्टिकोण अत्यंत निराशाजनक था| रविंद्र नाथ टैगोर जी के साहित्य में स्त्री प्रेम और कल्याण की निर्मल धारा के रूप में पूज्य रही है उनका मानना है कि स्त्री जाति पर सदियों तक अनेक अत्याचार हुए हैं किंतु अब प्रेम और कर्तव्य के पथ से कभी भी मूर्ख नहीं हुई है | रविंद्रनाथ टैगोर ने स्त्री को समान दायित्व की आधिकारिक यस की धरोहर तथा अधिकारों की उपभोक्ता बताया है गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर ने स्त्री शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व पर विशेष बल देते हुए कहते हैं कि पाश्चात्य देशों के समान भारत में भी स्त्रियों का समाज में अस्तर ऊंचा करने के लिए उन्हें सुशिक्षित किया जाए | वह पुरुषों से स्त्रियों को किसी भी दशा में पिछड़ा नहीं देखना चाहते थे |

श्री अरबिंदो घोष के अनुसार स्त्री शिक्षा के संबंध में उनका विचार था कि आदर्श नारी घर की चारदीवारी के अंदर की शोभा ना होकर कर्म तथा धर्म के क्षेत्र में स्वावलंबी बने | स्त्री शिक्षा के संबंध में हुए कहते हैं कि स्त्री शिक्षा को केवल व्यक्तिगत महत्व की दृष्टि से नहीं देखा जाए बल्कि सामाजिक दृष्टि से देखा जाना चाहिए | वह स्त्री शिक्षा के लिए स्वतंत्र विभाग स्थापित किए जाने पर विशेष बल देते हैं |

जन शिक्षा :- जन शिक्षा के संबंध में टैगोर एवं अरविंदो घोष के विचार समान रूप से मिलते जुलते हैं | यह दोनों ही जन शिक्षा के पक्षधर थे | इन दोनों का मत था कि भारत में लोकतंत्र की स्थापना पर बल देते हुए कहते हैं कि यह शिक्षा समाज कल्याण की दृष्टि से दी जाए गांव एवं शहर की शिक्षा में विशेष अंतर नहीं होना चाहिए |

धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा:- श्री अरबिंदो घोष से एक बहुत बड़े साधु संत तथा योगी थे | नैतिकता एवं धर्म पर उनकी अत्याधिक आस्था थी | वह नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा केवल पुस्तकों के द्वारा प्रदान नहीं करना चाहते थे क्योंकि पुस्तकों द्वारा प्रदान की गई शिक्षा का वास्तविक और संकुचित होती है और कभी–कभी वह हानिकारक भी सिद्ध होती है नैतिक शिक्षा हेतु यह आवश्यक है कि बालकों के संवेग और संस्कारों और स्वभाव को ऊंचा उठाया जाए एवं उनका उचित पद प्रदर्शन किया जाए | नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा के लिए यह आवश्यक है कि बालकों को अच्छी संगति मिले | श्री अरविंदो घोष प्राचीन गुरु शिष्य परंपरा के समर्थक थे | उनका मानना था कि आज भी उसी ढंग से नैतिक और धार्मिक

शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए | उनका मानना है कि धार्मिक शिक्षा के संबंध में या विचार है कि धर्म विशेष के सिद्धांतों की शिक्षा देना धार्मिक शिक्षा नहीं है |

उसी प्रकार रवींद्रनाथ टैगोर भी धार्मिक शिक्षा देने के प्रबल समर्थक है हुए एक धार्मिक पुरुष थे परंतु धर्म की संकीर्णता पूजा–पाठ आडंबर कर्मकांड आदि के विरुद्ध थे | टैगोर का मत था कि बालकों में चरित्र और आचरण का निर्माण किया जाए | गुरुदेव ने मानव जीवन में नैतिकता को अधिक महत्व दिया है उनके विचार में मनुष्य नैतिकता के द्वारा सर्वे बनता है और इसी के आधार पर उपरोक्त प्रगति करता है | टैगोर का विचार है कि नैतिकता और धर्म में गणित संबंध स्थापित होने चाहिए एवं उच्च धर्म नैतिक चेतना को ऊंचा उठाता है | वे नैतिक जीवन में नियंत्रण और स्वतंत्रता दोनों को महत्व दिए जाने पर बल देते हैं |

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा :- रविंद्रनाथ टैगोर के अनुसार राष्ट्रीय उत्थान के लिए राष्ट्रीय दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर प्राचीन भारतीय संस्कृति की परंपराओं से प्रभावित होकर उन्होंने भारत के लिए एक राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली पर जोर दिया और उसका प्रत्यक्ष रूप अपने विश्व भारती में भी स्पष्ट किया | गुरुदेव रविंद्र नाथ टैगोर बहुत बड़े राष्ट्र प्रेमी थे और उन्हें अपने शिक्षा को भी राष्ट्रीय परंपराओं के आधार पर ढाला था | अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के लिए उन्होंने मानव मूल्यों का विकास और उन मूल्यों का व्यवहार में प्रयोग पर विशेष बल दिए थे| अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के संबंध में उनका कहना था कि अंतरराष्ट्रीय भौगोलिक सीमा समाप्त होगी और मानव संघ को पूर्णता प्राप्त होगी | वर्तमान समय में हमारे पाठ्यक्रम में अंतरराष्ट्रीय भाग में भावनाओं को जागृत करना एक बड़ी साधना है |

श्री अरबिंदो घोष के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा को प्रत्येक के लिए आवश्यक बताते हुए कहते हैं कि समाज के ढांचे में परिवर्तन आए और लोगों के विचारों में भी परिवर्तन हो | राष्ट्रीय शिक्षा को व्यापक रूप प्रदान करने के लिए हुए देश विदेश की भाषाओं और संस्कृतियों को अपने आश्रम में स्थान देने पर बल देते हैं | अंतरराष्ट्रीय ता के संबंध में उनका विचार है कि विश्व के सभी मनुष्य अनेक राष्ट्रों में पृथक पृथक रहते हुए भी विश्व से पृथक नहीं है | अंतरराष्ट्रीय शिक्षा पर बल देते हुए गोश्त का मानना है कि अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा में प्राकृतिक एवं सामाजिक दोनों प्रकार का योग सम्मिलित है |

पाठ्यक्रम :- श्री अरविंदो घोष का विचार था कि शिक्षा का पाठ्यक्रम बालक के अनुसार ही होना चाहिए| पाठ्यक्रम में बाल मनोविज्ञान पर आधारित होना चाहिए श्री अरबिंदो घोष के अनुसार शिक्षक को सबसे पहले बालक को उसके चारों ओर के जगत से परिचित कराना चाहिए जिससे बालक अपने चारों और के जीवन काल और ज्ञान में रुचि ले सके प्रत्येक बालक में भिन्न–भिन्न मानसिक शक्तियां होती है इन शक्तियों के उपरांत उपयोग के लिए शिक्षा का पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाना चाहिए | पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक और भौतिक दोनों ही विषयों को रखने के पक्षधर हैं | आध्यात्मिक विषयों में धर्म शास्त्र नीति शास्त्र दर्शन शास्त्र वेद उपनिषद गीता आदि को स्थान देते हैं तथा भौतिक विषयों में भाषा और साहित्य विज्ञान गणित भूगोल इतिहास राजनीतिक समाजशास्त्र कृषि वाणिज्य और भूगर्भ विज्ञान तथा व्यवसायिक विषय भी आते हैं | अतः हम कह सकते हैं कि श्री अरविंद घोष के पाठ्यक्रम संबंधी विचार अत्यंत व्यापक है |

रविंद्र नाथ टैगोर का मानना है कि पाठ्यक्रम मैं सिर्फ केवल विषयों को सीखना मात्र ही पाठ्यक्रम में सम्मिलित नहीं किया जाए बल्कि उन्हें क्रियात्मक गतिविधियों को भी सम्मिलित करने का प्रयत्न किया है| वे पाठ्यक्रम को क्रियात्मक गतिविधियों पर केंद्रित शिक्षा को मानते हैं | वह प्रकृति को सर्वोत्तम पाठ्यपुस्तक मानते हैं टैगोर पाठ्यक्रम में बाल केंद्रित विस्तृत रचनात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष पर विशेष बल देते हुए कहते हैं कि पाठ्यक्रम बालक के जीवन में पूर्ण अनुभव से संबंधित हो जिससे विभिन्न स्रोतों से ज्ञान प्राप्त कर सके | टैगोर ने पाठ्यक्रम में भाषा एवं साहित्य गणित विज्ञान सामाजिक विज्ञान कला कृषि दर्शन एवं अन्य क्रियाकलाप बागवानी ब्राह्मण क्षेत्र अध्ययन वस्तुओं का संग्रह खेलकूद आत्मानुशासन प्रबंधन संबंधी क्रियाओं पर विशेष बल दिए हैं |

शिक्षण विधि:- टाइगर और आधुनिक शिक्षा शास्त्री के सामान्य शिक्षण विधि के संबंध में विचार रखते हैं | उनका मानना है कि शिक्षा की प्रक्रिया जीवन से पूर्ण होनी चाहिए | शिक्षा की प्रक्रिया परिचित से अपरिचित था समीप से दूर की ओर ले जाने वाली होनी चाहिए| शिक्षा प्रक्रिया में स्वतंत्र प्रयत्न और चिंतन होना चाहिए | जिज्ञासा और रुचि का प्रयोग होना चाहिए एवं क्रियाशीलता खेल रचना और सृजन का आनंद होना चाहिए | शिक्षण प्रक्रिया में मनोवैज्ञानिक ता वास्तविकता एवं क्रियाशीलता पर विशेष बल दिया गया है|

अरबिंदो घोष के अनुसार शिक्षण विधि ऐसा हो जिसमें बाल ज्ञान की खोज के लिए तैयार किए जाने चाहिए | उनका मानना था कि वर्तमान शिक्षा पद्धति में भूत वर्तमान और भविष्य तीनों को उचित स्थान दिया जाना चाहिए | वह बालकों की स्वतंत्रता पर बल देते हैं एवं उनके रुचियां के अनुसार अध्ययन करने पर बल देते हैं प्रेम एवं शांति के साथ अध्यापन एवं मात्री भाषा के प्रयोग पर बल देने के लिए कहते हैं |

शिक्षा एवं अनुशासन:- रविंद्रनाथ टैगोर आदर्शवादी भारतीय विचारक थे इसलिए परंपरा के अनुसार वह अनुशासन मानने वाले थे| हुए अनुशासन स्थापित करने के लिए बाहरी दबाव के पर छात्र अनुशासन पर अधिक बल दिया करते थे | अनुशासनहीनता से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए मनोवैज्ञानिक विधियों को प्रयोग में लाकर अच्छे परिणाम प्राप्त करते थे | उनका मानना था कि बालक अपने मस्तिष्क के जिज्ञासा की पूर्ति की पूर्ण स्वतंत्रता चाहता है | गुरुदेव का मानना है कि समाज को भी अनुशासन स्थापित करने के लिए उत्तरदाई माना जाए|

श्री अरविंद घोष के अनुसार शिक्षा जीवन और अनुशासन तीनों में परस्पर संबंध होना चाहिए | उनका मानना था कि प्रत्येक विद्यार्थी का जीवन अनुशासित होना चाहिए | उनका कहना था कि योग के साधना द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को अनुशासित किया जाना चाहिए | उनका कहना था कि शिक्षकों को अपने स्वयं के व्यवहार एवं चरित्र के द्वारा बालकों के समय वह आदर्श उपस्थित करना चाहिए कि वे से अनुशासित हो जाएं | बालकों में नैतिक शिक्षा प्रदान कर आंतरिक अनुशासन स्थापित करने पर बल देते हैं |

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

- कुमार संजय (2010) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत, आरo लालo बुक डिपो, मेरठ |
- सरीन अंजनी (2014) शैक्षिक अनुसंधान विधियां, अग्रवाल पब्लिकेशन,आगरा |
- सक्सेना एनoआरo स्वरूप (2010) शिक्षा के दार्शनिक सिद्धांत आरoलालo बुक डिपो, मेरठ
- गुप्ता, एसo पीo- भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद,1998 |
- Gitanjali, The Indian Society, Londan,1912
- Website :-WWW. Visva -bharati. ac. In